Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 16/May/2025 **IJRAW:** 2025; 4(6):271-274 **Accepted:** 24/June/2025

सामाजिक राजनीतिक संघर्षः एक अध्ययन

*[1]हेमलता कुम्पावत

*[1]सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.पी.सी. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

सारांश

संघर्ष मानव के सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवहार का आवश्यक गुण है। संघर्ष सनातन काल से चली आ रही वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने हितों का समाजीकरण एवं राजनीतिकीकरण करते हैं। अतः जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों के मध्य विरोध, टकराव अथवा मतभेद होते हैं तो उसे संघर्ष कहा जाता है। यह संघर्ष न केवल राष्ट्रों के विकास एवं स्थिरता को प्रभावित करते हैं वरन उस राष्ट्र की सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करते हैं। इन संघर्षों की उत्पत्ति का मुख्य कारण जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्रीय असमानता एवं आर्थिक विषमता के साथ आपसी हितों में टकराव है। अतः संघर्ष को समाप्त करने की अपेक्षा इसका शांतिपूर्ण समाधान आवश्यक है, जिसे संवाद, शिक्षा, संघर्ष, नियोजन एवं न्यायप्रणाली के सुदृढ़ीकरण से ही सम्भव है। इसके अतिरिक्त सभी नागरिकों एवं वर्गों के मध्य समानता, सहिष्णुता एवं सह–अस्तित्व की भावना को प्रज्जवलित करके इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः संघर्ष, राजनीतिक तनाव, सामाजिक समरसता, समाजीकरण।

प्रस्तावना

सत्ता, अधिकार, युद्ध एवं शांति की तरह संघर्ष भी राजनीति एवं सामाजिक सभ्यता का महत्त्वपूर्ण भाग है। जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों, वर्गों या समूहों के हित आपस में टकराते हैं तो उनके मध्य संघर्ष होना अनिवार्य है। संघर्ष कई प्रकार का हो सकता है, जैसे सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, सांस्कृतिक संघर्ष, जातिय संघर्ष, धार्मिक संघर्ष एवं अन्य संघर्ष जिसमें एक समूह के विचार, दृष्टिकोण, परम्पराएँ एवं विश्वास और मूल्य एक–दूसरे से टकराते हैं।

संघर्ष का अर्थः–

संघर्ष शब्द अंग्रेजी भाषा के CONFLIT शब्द से बना है जो Conflict लेटिन भाषा का शब्द Con + Fligo से बना है जिसमें Con का अर्थ together और fligo का अर्थ To, strike है। अतः संघर्ष का अर्थ विरोध करना अथवा लड़ना हुआ। अर्थात् संघर्ष शब्द दो परस्पर विरोधी कार्यपद्धतियों की संक्रिया है, जहां दो या दो से अधिक पक्ष एक दूसरे के साथ असहमत होते हैं।

परिभाषाः

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसारः दो वर्गों में या समूहों के बीच सशस्त्र प्रतिरोध, लड़ाई, या युद्ध संघर्ष है। विपरीत सिद्धान्तों, कथनों, तर्कों आदि से विरोध भी संघर्ष तथा विचारों और पसन्द के बीच असामन्जस्यपूर्ण व्यवहार भी संघर्ष है।

प्रो. ग्रीनः संघर्ष जानबूझकर किया गया वह प्रयत्न है जो किसी इच्छा का विरोध करने, उसके आगे आने अथवा उसको दबाने के लिए किया जाता है। [1]

गिलीन एवं गिलीन के अनुसारः संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विरोधी के प्रति प्रत्यक्ष हिंसा या हिंसा की धमकी देते हैं। [2]

जोनार्थन एच टर्नरः ये संघर्ष को सांस्कृतिक मूल्यों और विश्वासों में अंतर के कारण होने वाले संघर्ष के रूप में परिभाषित करते हैं। [3]

सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्ष के कारण

सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्ष के अनेक कारण हैं

***Corresponding Author:** हेमलता कुम्पावत

जिनमें से प्रमुख कारण इस प्रकार है–

- **आपसी हितों का टकराव**: जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों के हितों में परस्पर टकराव होता है तो उनके अथवा समूहों के मध्य संघर्ष होना स्वाभाविक है, जैसे मिल मालिक कम मजदूरी देकर अधिक कार्य करवाना चाहता है जबकि श्रमिक अधिक मजदूरी में कम श्रम करना चाहता है।
- **सांस्कृतिक विभिन्नता**: व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग होता है और जब वह समाजीकरण की प्रक्रिया के भागीदार के रूप में उस समाज की परम्पराओं, विश्वासों, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों को व्यवहार में लाता है लेकिन जब यही कार्य दूसरी संस्कृति के व्यक्ति करते हैं, जिनके अपने मूल्य एवं विश्वास अन्य संस्कृति के लोगों से मेल नहीं खाते हैं, तब उनमें संघर्ष होना अनिवर्य है। अतः दो या अधिक परस्पर विरोधी संस्कृतियों में संघर्ष के अवसर होने की संभावना अधिक होती है।
- **सामाजिक परिवर्तन**: जब लोगों की अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले एक अनिश्चित व्यवहार की अपेक्षाएं पूरी नहीं होती है क्योंकि उसकी ये अपेक्षाएं अलग होती हैं। जब किसी समाज में सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप नये विचार, विश्वास, मूल्यों एवं दृष्टिकोणों का उद्भव होता है जो कि पुराने विचारों से मेल नहीं खाता है या उनसे असंगत होते हैं तो उनमें संघर्ष होता ही है।
- **व्यक्तिगत हितों में टकराव**: जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों में आपस में विरोधी लक्ष्यों को लेकर मतभेद, घृणा, द्वेष मूल्य व दृष्टिकोण में मतभेद, स्वभाव रंग, शारीरिक गठन आदि के कारण अथवा अपने हितों की पूर्ति हेतु अन्य व्यक्तियों को हानि पहुंचाने का प्रयास किया जाता है।

सामाजिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र

सामाजिक संघर्ष सामाजिक संरचना की विभिन्न उप व्यवस्थाओं के मध्य संघर्ष एवं असहमति है। सामाजिक संघर्ष का मूल कारण समाज के भीतर संचालित सामाजिक एवं आर्थिक ताकतों के मध्य संघर्ष का होना है। जब दो या दो से अधिक लोग सामाजिक संपर्क में एक दूसरे का विरोध करते हैं एवं सहयोग की भावना के साथ संसाधनों के लिए निरन्तर प्रतिस्पर्धा एवं शक्ति संघर्ष की प्रक्रिया में भाग लेते हैं तो यह सामाजिक संघर्ष विकराल रूप धारण कर लेता है।

कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स के अनुसार "मानव इतिहास वर्ग संघर्ष का परिणाम है। प्रारम्भ से ही समाज दो भागों में विभाजित रहा है, प्राचीन समय में स्वामी एवं दास, सामंती समाज में जमींदार एवं कृषक, वर्तमान समय में मालिक एवं मजदूर वर्ग है, जिनमें निरन्तर सहयोग एवं संघर्ष चलता रहता है।" [5]

दो या दो से अधिक जातीय समूहों के मध्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति के लिए होने वाला संघर्ष है जिसमें अपने जातीय समूहों की स्थिति या श्रेष्ठता के लिए स्पष्ट रूप से लड़ते हैं। [7]

सामाजिक संघर्ष के क्षेत्र

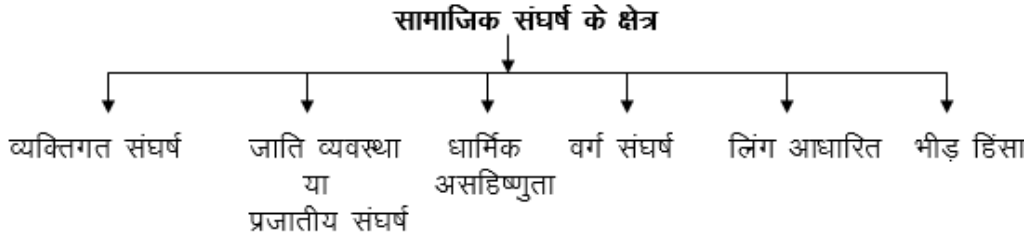

- **व्यक्तिगत संघर्ष**: जब समाज में रहने वाले दो या दो से अधिक व्यक्ति अथवा समूह परस्पर विरोधी लक्ष्यों को लेकर घृणा, द्वेष, तनाव, क्रोध एवं शत्रुतापूर्वक अपने हितों की पूर्ति हेतु अन्य व्यक्तियों को हानि पहुंचाने का प्रयास करते है तो वह व्यक्तिगत संघर्ष कहलाता है।
- **प्रजातीय संघर्ष**: प्रजातीय संघर्ष से तात्पर्य है कि जब विभिन्न भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं अन्य परिस्थितियों के आधार पर अथवा व्यक्तियों की जीव संरचना विशिष्ट शारीरिक लक्षण रंग, नस्ल वंश की अवधारणा पर आधारित संघर्ष या रिवाज एवं परम्परा की भिन्नता पर जातीय पृथकता की नीति काले या गोरे का भेदभाव प्रजातीय संघर्ष के उदाहरण हैं।
- **धार्मिक असहिष्णुता अथवा साम्प्रदायिक तनाव**: राज्य एवं समाज के मध्य संभावित तनाव का एक मुख्य कारण धार्मिक एवं वर्ग विशेष की साम्प्रदायिक भूमिका भी है। जब समाज के अन्तर्गत एक वर्ग धार्मिक आधार पर दूसरे की भावनाओं को आहत करता है तो यह सामाजिक तनाव का मुख्य कारण होता है।
- **वर्ग संघर्ष**: समाज में मुख्य रूप से दो वर्गों का प्रादुर्भाव रहा है एक वर्ग शोषक एवं दूसरा वर्ग शोषित। कार्ल मार्क्स के अनुसार इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है, इन वर्गों के मध्य हमेशा से ही जहां एक दसरे की आवश्यकता रहती है वहीं संघर्ष भी विद्यमान रहता है। जब तक वर्ग विहिन समाज की स्थापना नहीं हो जाती है तब तक शोषक एवं शोषित वर्गों में संघर्ष अनवरत चलता रहेगा।
- **लिंग आधारित भेदभाव**: नारीवाद सामाजिक, राजनीतिक एवं वैचारिक आन्दोलन है, इसका प्रारम्भ 18वीं सदी में हुआ, जब समाज में महिलाओं के साथ

भेदभाव इस आधार पर किया जाता है कि वह स्त्री है, इस कारण उन्हें पुरूषों से न केवल कमतर आंका जाता था, वरन उन्हें शिक्षा, सम्मान, रोजगार स्वतन्त्रता व समानता के अधिकार के विरूद्ध कई बार जीने का अधिकार से भी वंचित कर दिया जाता था, जैसे भ्रूण हत्या, कम दहेज पर जला देना आदि। किन्तु जन जागरूकता एवं शिक्षा के द्वारा महिलाओं में जागृति आती है तो अपने अधिकारों की मांग करती हैं, विभिन्न नारीवादी आन्दोलन होते हैं और ये एक नये सामाजिक संघर्ष को जन्म देते हैं। जैसे समान कार्य के लिए समान वेतन, स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा व सम्पत्ति के अधिकारों की मांग आदि।

- **माब लिचिंग (भीड़ हिंसा):** वर्तमान समय में सामाजिक संघर्ष का एक नया रूप उभरकर सामने आया है जिसे हम भीड़ हिंसा कह सकते हैं। जिसमें भीड़ कानून एवं व्यवस्था को ताक पर रखकर स्वयं ही फैसला कर तत्काल दण्ड का निर्धारण कर देती है जैसे भीड़ द्वारा चोरी के शक में बालक चोर गिरोह समझकर गौ मास अथवा गौ तस्करी के शक में वर्ग विशेष के व्यक्ति को भीड़ द्वारा पीट पीट कर हत्या करना भीड़ हिंसा के भयावह उदाहरण है, जो सामाजिक संघर्ष एवं तनाव को बढ़ावा देता है।

राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र

राजनीतिक संघर्ष सत्ता के लिए संघर्ष है, यह विभिन्न राजनीतिक संरचनाओं के मध्य परस्पर संघर्ष एवं सहयोग है। चूंकि सामाजिक विज्ञान, राजनीति एवं इनसे सम्बन्धित प्रश्नों पर समाज की एक उपप्रणाली के रूप में विचार करता है इसलिए राजनीति पर स्वतन्त्र रूप से नहीं वरन समाज के साथ इसके सम्बन्ध को ध्यान में रखकर विचार किया जाता है। राज्य का मुख्य कार्य सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त संघर्षों को सुलझाकर व्यवस्था स्थापित करना है। राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र इस प्रकार हैं।

राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र

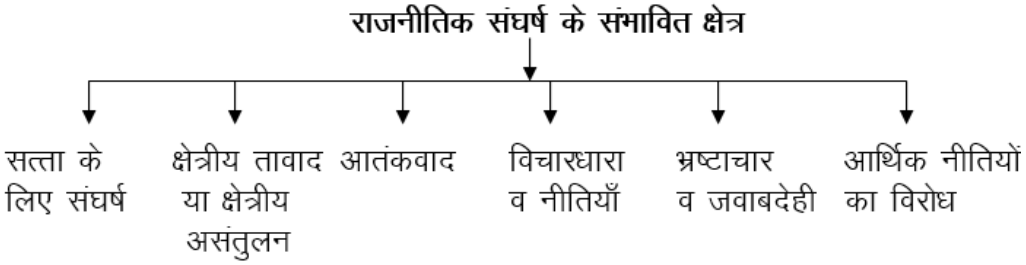

- **सत्ता के लिए संघर्ष:** राजनीतिक संघर्ष का केन्द्रीय बिन्दु हमेशा से ही 'सत्ता' के लिए संघर्ष रहा है। जैसा कि मार्गेन्थो ने कहा है कि सत्ता के लिए संघर्ष मानवीय और अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रीय तत्व है। विभिन्न राजनीतिक दलों के मध्य हमेशा सत्ता प्राप्त करने हेतु संघर्ष चलता रहता है। इस कारण राष्ट्रीय हितों की भी अनदेखी होती है।
- **क्षेत्रीयवाद या क्षेत्रीय असन्तुलनः** यदि किसी राष्ट्र का आकार बड़ा होता है तो वहां संघर्ष का मुख्य कारण क्षेत्रीय पहचान और अपने क्षेत्र की स्वायत्ता को लेकर होता है। इसके साथ ही दो राज्यों में सीमा विवाद, संसाधनों का बंटवारा आदि के कारण संघर्ष होता है। इसके अतिरिक्त केन्द्र और राज्यों के मध्य भी वित्तीय संसाधन एवं अधिकारों को लेकर संघर्ष होता है। जब सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाएं ढंग से कार्य नहीं करती हैं तो समाज में असंतोष उत्पन्न होता है जिसके कारण भूखमरी, बेरोजगारी, गरीबी एवं धन की असमानता बढ़ती है, तो दूसरी ओर धार्मिक प्रक्रिया के सही संचालन का अभाव होता है, उदाहरण के लिए सही समय पर न्याय नहीं होना, भ्रष्टाचार, घूस, लालफीताशाही आदि के कारण जनता में असंतोष व्याप्त होना एवं इस कारण कुछ लोग आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं और कानूनी व्यवस्था को ताक पर रखकर देश के लोगों में भय एवं दहशत उत्पन्न करते हैं जैसे हाल ही पहलगाम की आतंकवादी घटना जिसमें 26 पर्यटक आतंकवादियों द्वारा मारे गए।
- **विचारधारा सम्बन्धी संघर्षः** किसी देश में विचारधारा एवं उनसे सम्बन्धित नीतियों को लेकर संघर्ष उत्पन्न होते हैं जैसे धर्म निरपेक्षता या साम्प्रदायिकता सम्बन्धी विचारधारा अथवा वामपंथी बनाम दक्षिणपंथी विचारधारा के मध्य होने वाले संघर्ष उस राष्ट्र में अस्थिरता व संघर्ष का वातावरण उत्पन्न करते हैं।
- **भ्रष्टाचार और जवाबदेही सम्बन्धी संघर्षः** जब जनता राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार व लालफीताशाही से परेशान हो जाती है तो वह शासन व्यवस्था एवं उसकी प्रक्रिया में सुधार जवाबदेह एवं उत्तरदायी शासन की मांग करती है और इस तरह एक संघर्ष उत्पन्न होता है जनता एवं सरकार के मध्य।
- **सरकार की आर्थिक नीतियों से सम्बन्धित संघर्षः** देश में सरकार की नीतियों को लेकर राष्ट्र कई गुटों में विभाजित हो जाता है एक वर्ग जो सरकार की नीतियों से सहमत हो और दूसरा जो आर्थिक नीतियों में परिवर्तन का विरोध करता है। जैसे किसानों, मजदूरों, कर, निजीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण नीतियां आदि।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में होने वाले सम्भावित संघर्षों का शांतिपूर्ण तरीके से एवं सही संघर्ष प्रबंधन के द्वारा ही समाधान संभव हो सकता है। इसके लिए संवाद, शिक्षा, न्यायप्रणाली के सुदृढ़ीकरण के साथ सह–अस्तित्व एवं नागरिक गुणों का विकास अति आवश्यक है। राज्य एवं सरकारों का भी कर्तव्य है कि वे सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्ष के क्षेत्रों की पहचान करें एवं उसका पक्षपातरहित तरीके से समाधान का प्रयास करें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ग्रीन, प्रो थामस हिल (1882), लेक्चर ऑन दा प्रिन्सीपल आफ पोलिटिकल आब्लीगेशन, केन्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. गिलिन, एवं गिलिन (1945) क्रिमीनोलोजी एण्ड पेनोलोजी, एप्पल एकेडमी प्रेस, यू.एस.एस.ए. (गिलिन लेविज जान एवं जान फिलिप गिलिन)
3. जोनार्थन, एच टर्नर (2005) समाजशास्त्र प्रेंटिस हाल, आईएसबीएन नं. 978–0–13–113496–614
4. ग्रेवे, एलेक्जेंडर (2005) आइ एम सिंक टू डेथ विद यू–या फाल्टी टावर्ज में बाहरी चरित्र संघर्ष, ग्रिन वर्लाग, पृ. 10
5. मार्क्स, कार्ल एवं एंजेल्स एफ (1948) मेनिफेस्टो
6. वार्ष्णेव, आशुतोष (2002) जातीय संघर्ष और नागरिक जीवन, भारत में हिन्दू और मुसलमान, न्यू हेवन, येल यूनिवर्सिटी
7. फ्रेकयेन, स्टुअर्ट जे (2001) आधुनिक घृणा, जातीय युद्ध की प्रतीकात्मक राजनीति, इथाका कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 17
8. मार्क्स, कार्ल (1867) दास केपिटल, हम्बर्ग प्रकाशन, जर्मनी
9. वोल्स्टोन, मैरी (1972) ए विन्डीकेशन ऑफ दा राइटज ऑफ वूमन
10. मार्गेन्थाऊ, हंस जे (1948) पालिटिक्स अमंग दा नेशंस, दा स्ट्रगल फोर पावर एण्ड पीस।